Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें

सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 9

प्रीतेश जोशी

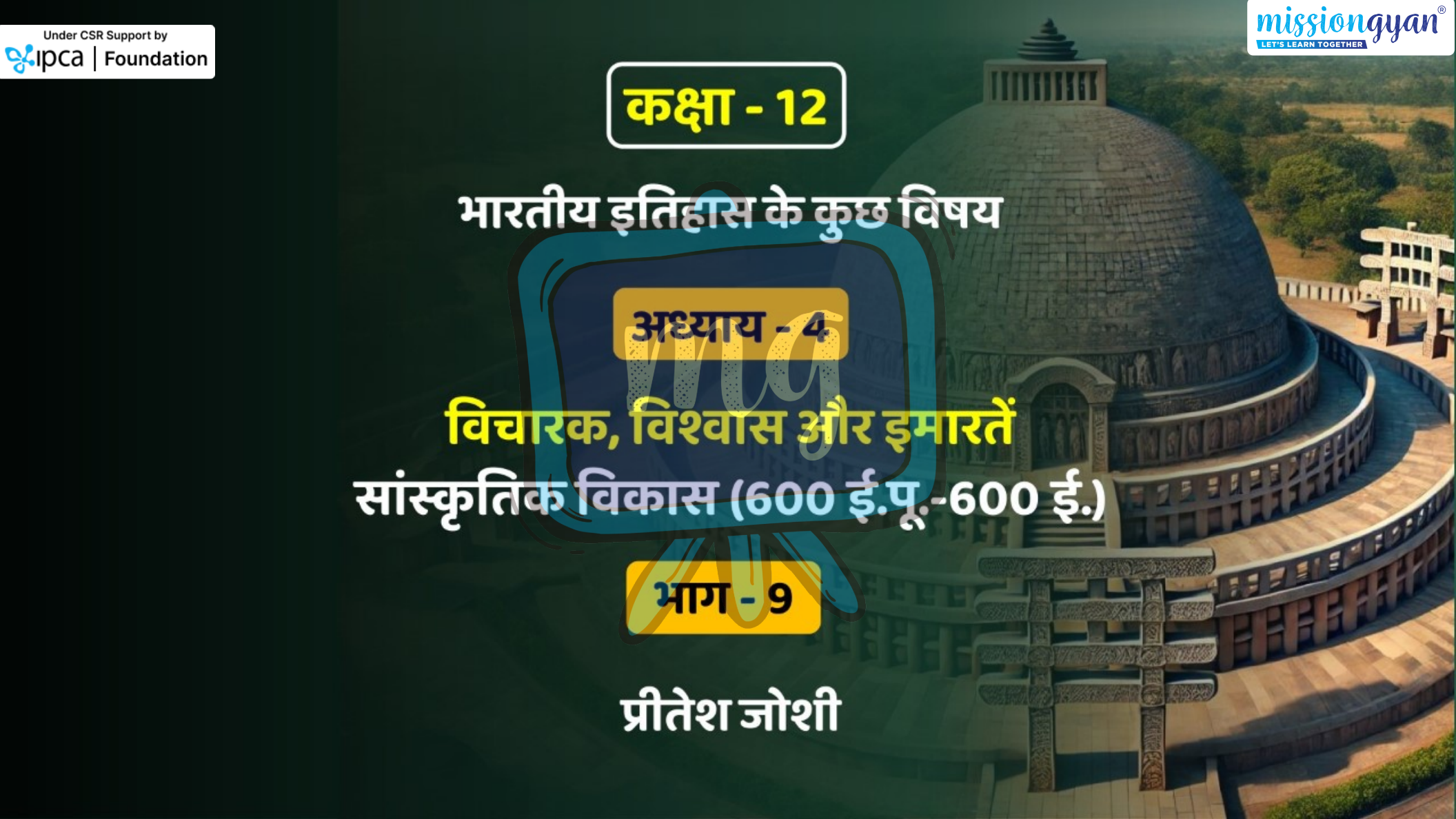

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

जातक

बौ

4. निम्नलिखित संक्षिप्त अभिलेख को पढ़िये और जवाब दीजिए–

33

महाराज हुविष्क (एक कुषाण शासक) के तैतीसवें साल में गर्म मौसम के पहले महीने के आठवें दिन त्रिपिटक जानने वाले भिक्खु बल की शिष्या, त्रिपिटिक जानने वाली बुद्धमिता के बहन की बेटी भिक्खुनी धनवती ने अपने माता–पिता के साथ मधुवनक में बोधिसत्त की मूर्ति स्थापित की।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



(क) धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कैसे निश्चित की ?

उत्तर : धनवती ने अपने अभिलेख की तारीख कुषाण शासक महाराज हुविष्क के शासनकाल की सहायता से निश्चित की।

यह तारीख हुविष्क के शासनकाल के तैतीसवें साल की ग्रीष्म ऋतु के पहले महीने को आठवां दिन है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

सुत्त
विनय
अभिधम्म

(घ) वे कौनसे बौद्ध ग्रंथों को जानती थीं ?

उत्तर :- वे बौद्ध ग्रंथों त्रिपिटकों को जानती थीं।

(ड.) उन्होंने ये पाठ किससे सीखे थे।

उत्तर :- उन्होंने ये पाठ अपने गुरू भिक्षु बल से तथा मौसी बुद्धमिता से सीखे थे।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

आभेलेख
कहा → जगह
परिवार
व्यवसाय

(ख) आपके अनुसार उन्होंने बोधिसत्त की मूर्ति क्यों स्थापित की ?

उत्तर : धनवती एक बौद्ध भिक्षुणी थी।

- उसकी बौद्ध धर्म में अत्यधिक श्रद्धा थी।
- अतः बौद्ध धर्म के प्रति अपनी श्रद्धा एवं सम्मान को प्रकट करने के लिए उसने बोधिसत्त की मूर्ति स्थापित की।

(ग) वे अपने किन रिश्तेदारों का नाम लेती हैं ?

उत्तर :- वे अपनी मौसी बुद्धमिता तथा अपने माता-पिता का नाम लेती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

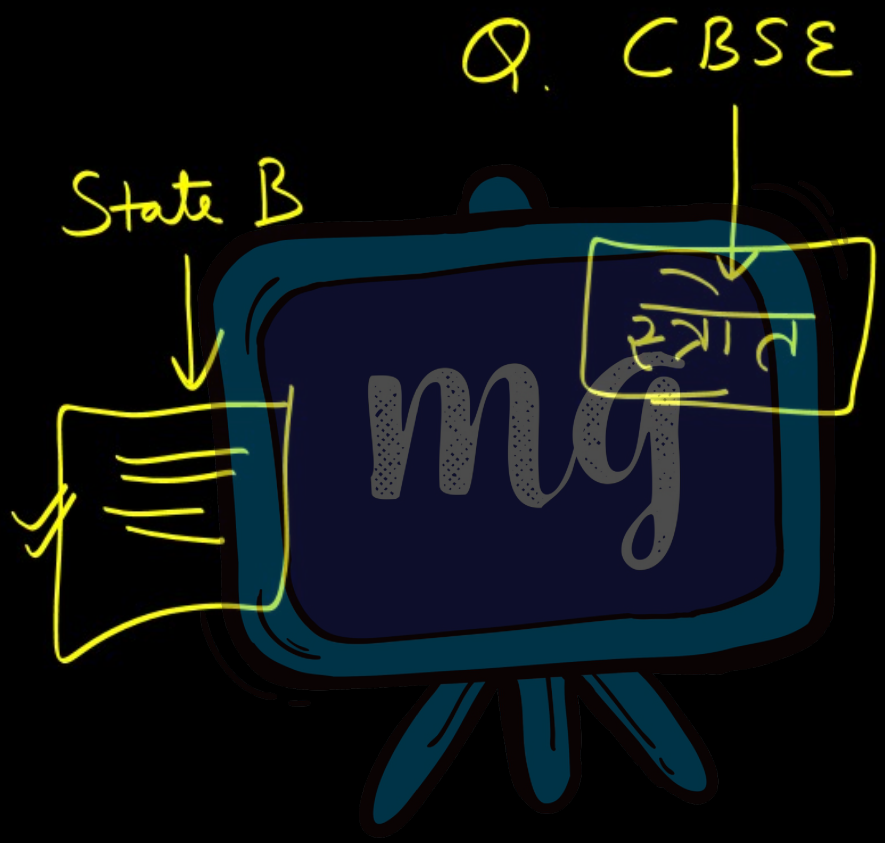

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

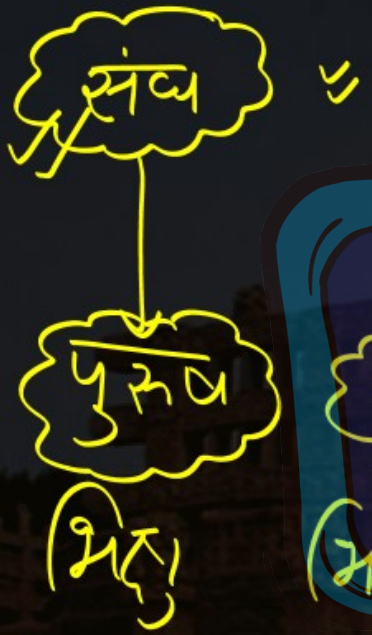

5. आपके अनुसार स्त्री-पुरूष संघ में क्यों जाते थे?

उत्तर : बुद्ध के शिष्यों का एक दल तैयार हो गया था इसलिए उन्होंने संघ की स्थापना की।

- इसमें आने पर भिक्षु धम्म के शिक्षक बन जाते थे।
- प्रारम्भ में सिर्फ पुरूष ही संघ में सम्मिलित हो सकते थे। लेकिन बाद में बुद्ध के प्रिय शिष्य आनंद ने बुद्ध को समझाकर संघ में महिलाओं को आने की अनुमति प्राप्त की।
- बुद्ध की उपमाता महाप्रजापति गोतमी संघ की पहली महिला भिक्षुणी थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

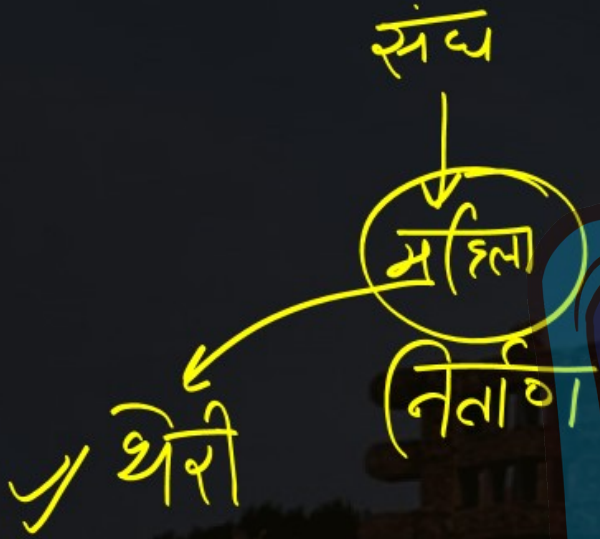

- कई महिला संघ में आकर धम्म की उपदेशिकाऐं बन गईं।
- आगे चलकर वे थेरी बनीं जिसका मतलब है – "ऐसी महिलाऐं जिन्होंने निर्वाण प्राप्त कर लिया हो।"
- एक बार संघ में आ जाने पर सभी को बराबर माना जाता था। क्योंकि भिक्खु और भिक्खुनी बनने पर उन्हें अपनी पुरानी पहचान को त्याग देना पड़ता था।
- संघ की संचालन पद्धति इस प्रकार की थी कि या तो लोग बातचीत के द्वारा एकमत होने की कोशिश करते थे अथवा मतदान द्वारा निर्णय लिया जाता था। अत: लोकतांत्रिक पद्धति थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- बुद्ध के समय तथा उनके बाद भी लोग बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए। क्योंकि लोग समकालीन धार्मिक प्रथाओं से असंतुष्ट थे तथा उस युग में हो रहे सामाजिक बदलावों से भी उलझनों में थे।
- बौद्ध शिक्षाओं में जन्म आधारित श्रेष्ठता की बजाय अच्छे आचरण और मूल्यों को महत्व दिया गया इसलिए महिलाऐं और पुरूष इस धर्म की ओर आकर्षित हुए।
- साथ ही स्वयं से छोटे और कमजोर लोगों से 'मित्रता और करूणा' के भाव भी लोगों को बहुत भाये।

Under CSR Support by ipca | Foundation

missiongyan LET'S LEARN TOGETHER

संघ ? / बौद्ध ?

Intro. ✓

संघ
महिला → क्यों ?

1) समानता
2) लोकतांत्रिक
3) करुणा / विषमताओं
4) पुरुष = महिला
5) इच्छा
6) समकालीन → वर्ण

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

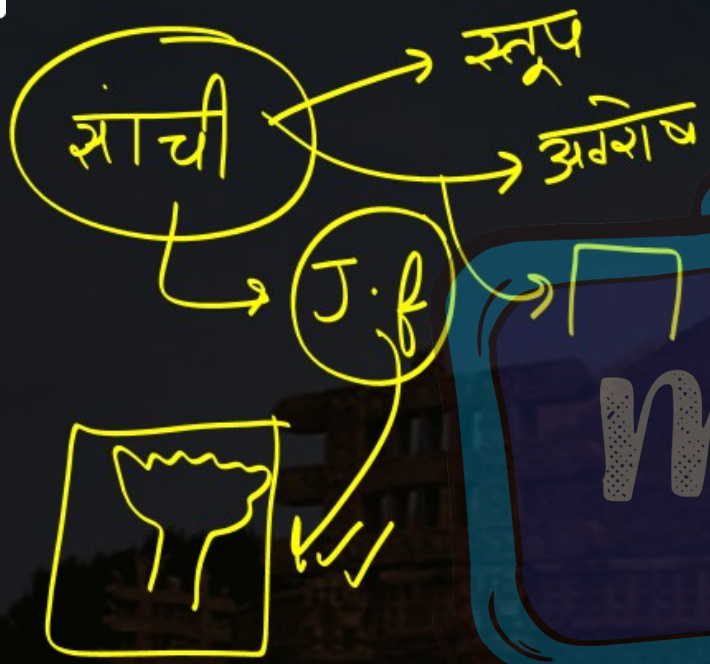

6. सांची की मूर्तिकला को समझने में बौद्ध-साहित्य के ज्ञान से कहां तक सहायता मिलती है ?

उत्तर :

सांची की विभिन्न मूर्तियों को बौद्ध साहित्य के द्वारा जाना गया।

1. पत्थर में गढ़ी कथाऐं :-

सांची के उत्तरी तोरणद्वार के एक हिस्से में एक मूर्ति है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- पहली बार देखने पर तो इस मूर्तिकला अंश में फूस की झोंपड़ी और पेड़ों वाले ग्रामीण दृश्य का चित्रण मिलता है।
- परन्तु जब इतिहासकारों ने सांची की इस मूर्तिकला का गहराई से अध्ययन किया, तो वे इसे वेसान्तर जातक से लिया गया एक दृश्य बताते हैं।
- यह कहानी एक ऐसे दानी राजकुमार की है जिसने अपना सब कुछ एक ब्राह्मण को सौंप दिया और स्वयं अपनी पत्नी और बच्चों के साथ जंगल में रहने चला गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

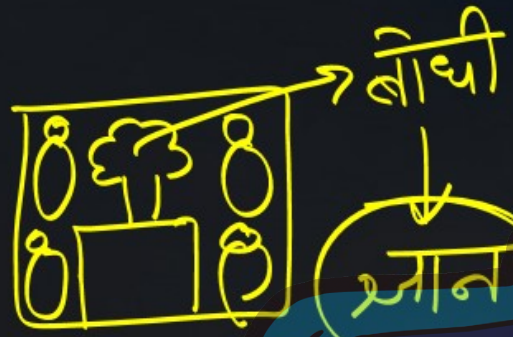

- इस उदाहरण से यह स्पष्ट है कि अक्सर इतिहासकार किसी मूर्तिकला की व्याख्या लिखित साक्ष्यों के साथ तुलना के द्वारा करते हैं।

2. उपासना के प्रतीक :-

- बौद्ध मूर्तिकला को समझने के लिए इतिहासकारों को बुद्ध के चरित लेखन के बारे में जानकारी प्राप्त करनी पड़ी।
- बौद्ध चरित लेखन के अनुसार एक वृक्ष के नीचे ध्यान करते हुए बुद्ध को ज्ञान की प्राप्ति हुई।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

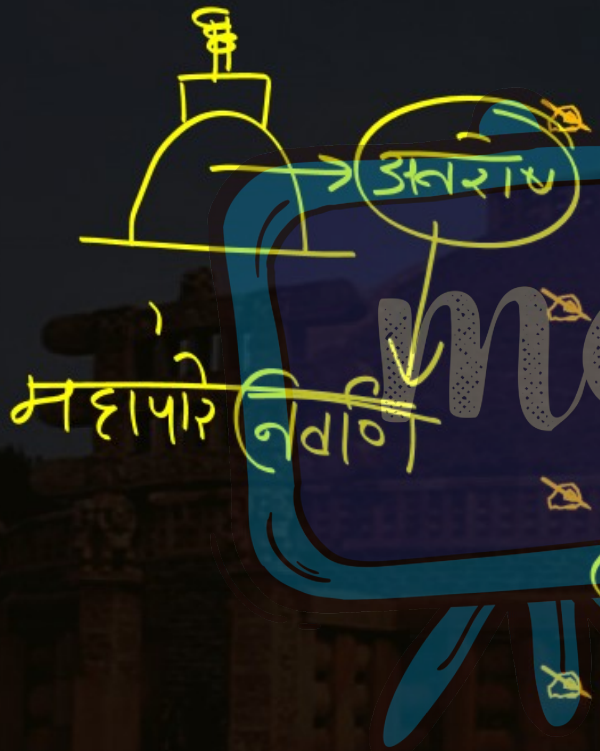

- कई प्रारम्भिक मूर्तिकारों ने बुद्ध को मानव रूप में ना दिखाकर उसके स्थान पर प्रतीकों को दर्शाया।
- जैसे एक मूर्ति में बुद्ध के स्थान पर बुद्ध के ज्ञान प्राप्ति वाला वृक्ष दर्शाया गया है।
- बुद्ध के ध्यान की दशा तथा स्तूप महापरिनिब्बान के प्रतीक बन गए।
- 'चक्र' का प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया गया है।

पेड़ का तात्पर्य केवल पेड़ नहीं था वरन् यह बुद्ध के जीवन की घटना का प्रतीक है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



3. लोक परंपराऐं :-

- सांची में उत्कीर्णित बहुत सी अन्य मूर्तियां शायद बौद्ध मत से सीधी जुड़ी नहीं थीं।
- इनमें कुछ सुंदर स्त्रियां भी मूर्तियों में उत्कीर्णित हैं जो तोरणद्वार के किनारे पर पेड़ पकड़ कर झूलती हुई दिखती हैं।
- शुरू-शुरू में विद्वान इस मूर्ति के महत्व के बारे में थोड़े असमंजस में थे।
- इस मूर्ति का त्याग और तपस्या से कोई रिश्ता नजर नहीं आता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- यद्यपि साहित्यिक परंपराओं के अध्ययन से वे समझ पाये कि यह संस्कृत भाषा में वर्णित शालभंजिका की मूर्ति है।
- लोक परंपरा में यह माना जाता था कि इस स्त्री द्वारा छुये जाने से वृक्षों में फूल खिल जाते थे और फल आने लगते थे।
- ऐसा लगता है कि यह एक शुभ प्रतीक माना जाता था और इस कारण स्तूप के अलंकरण में यह प्रयुक्त हुआ।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

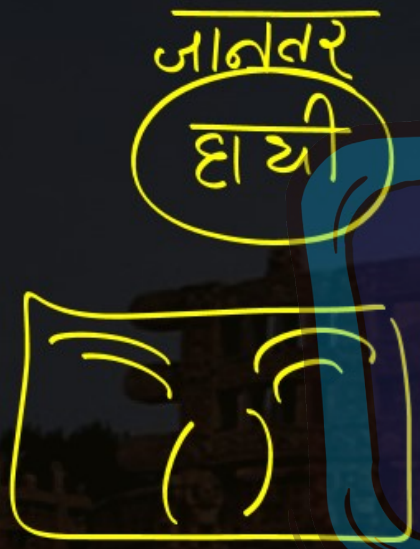

4. सांची की मूर्तियों में पाये गये प्रतीकों का लोक परंपराओं में उभरना :-

- जानवरों के कुछ बहुत खूबसूरत उत्कीर्णन यहां पर पाये गये हैं।
- इन जानवरों में हाथी, घोड़े, बंदर और गाय-बैल शामिल हैं।
- हालांकि सांची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियां हैं।
- ऐसा लगता है कि लोगों को आकर्षित करने के लिए यहां जानवरों को उत्कीर्णन किया गया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- साथ ही जानवरों को मनुष्य के गुणों के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता था।
- जैसे हाथी शक्ति और ज्ञान के प्रतीक माने जाते थे।

5. कमलदल और हाथियों के बीच एक महिला की मूर्ति का उत्कीर्णन :-

- इस मूर्ति में हाथी महिला पर जल छिड़क रहे हैं। जैसे – वे उसका अभिषेक कर रहे हैं।
- कुछ इतिहासकार उन्हें बुद्ध की माँ माया से जोड़ते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कुछ उन्हें लोकप्रिय देवी 'गजलक्ष्मी' मानते हैं क्योंकि गजलक्ष्मी ओर सौभाग्य लाने वाली देवी थी जिन्हें प्रायः हाथियों से जोड़ा जाता है।
- कुछ इन मूर्तियों को देखने वाले माया और गजलक्ष्मी दोनों से जोड़ते हैं।

6. स्तम्भों पर सर्पों का उत्कीर्णन :-

- कुछ स्तंभों पर सर्पों का उत्कीर्णन है।
- यह प्रतीक (सर्प) ऐसी लोग परंपराओं से लिया गया प्रतीत होता है जिसका ग्रंथों में हमेशा जिक्र नहीं होता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- दिलचस्प बात यह है कि इतिहासकार जेम्स–फर्गुसन ने सांची को वृक्ष और सर्प पूजा का केन्द्र माना था।
- वे बौद्ध साहित्य से अनभिज्ञ थे। तब तक ज्यादातर बौद्ध ग्रंथों का अनुवाद नहीं हुआ था। इसलिए उन्होंने सिर्फ उत्कीर्णित मूर्तियों का अध्ययन करके अपने निष्कर्ष निकाले थे।
- इस प्रकार से साँची की मूर्तिकला को समझने के लिए बौद्ध साहित्यों ने अपना बड़ा योगदान दिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

साँची ग्रंथ ?

1. मूर्ति → ग्रामीण X → ते सान्तर जातक
2. प्रतीक → → ध्यान
   → निर्वाण
   → परिवर्तन
3. लोक परंपरा → शाल भंजिका → यूप
4. अन्य → हाथी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

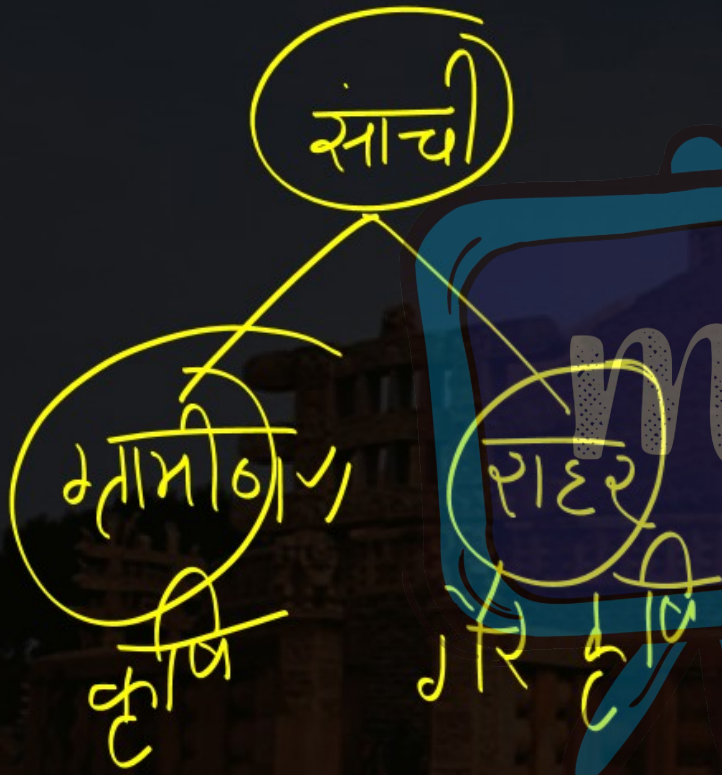

7. यहां साँची से लिए गए दो परिदृश्य दिए गए हैं। आपको इनमें क्या नजर आता है ? वास्तुकला, पेड़-पौधे और जानवरों को ध्यान से देखकर तथा लोगों के काम धंधों को पहचान कर यह बताइए कि इनमें से कौनसे ग्रामीण और कौनसे शहरी परिदृश्य हैं ?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उत्तर :

(I)

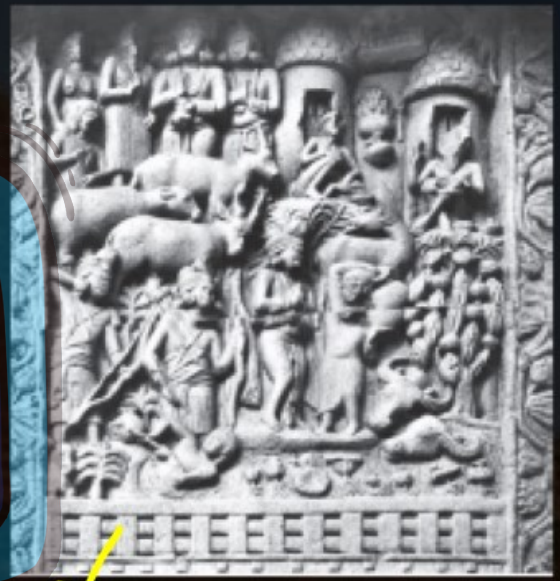

यह चित्र ग्रामीण परिदृश्य से संबंधित है।

इनमें अनेक मनुष्य, पेड़-पौधे तथा जानवर जै

हिरण, गाय, भैंस आदि दर्शाये गये हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

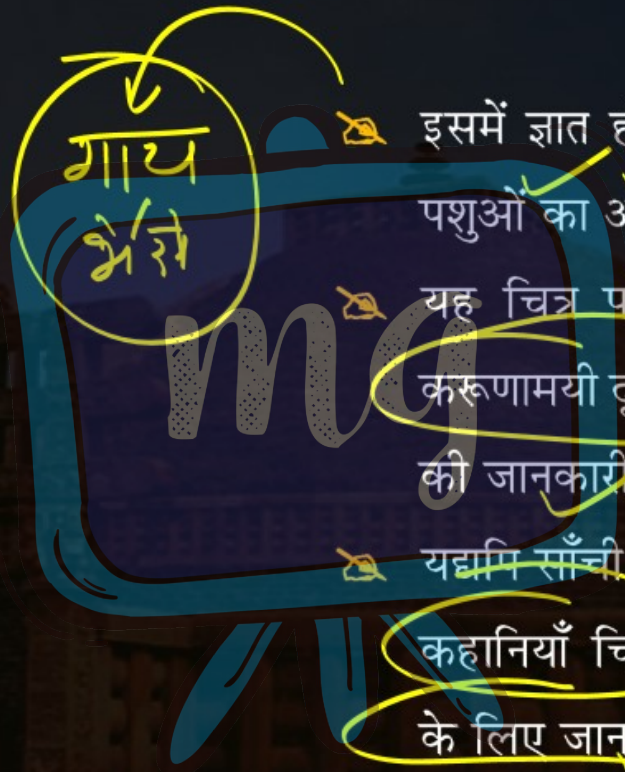

- इसमें ज्ञात होता है कि ग्रामीण लोगों के जीवन में पशुओं का अत्यधिक महत्व था।
- यह चित्र पशुओं, पेड़-पौधों के प्रति बौद्धों के करूणामयी दृष्टिकोण तथा अहिंसा के प्रति अटूट श्रद्धा की जानकारी देता है।
- यद्यपि साँची में जातकों से ली गई जानवरों की कई कहानियाँ चित्रित हैं क्योंकि लोगों को आकर्षित करने के लिए जानवरों को उत्कीर्णित किया गया है।
- साथ जी जानवरों को मनुष्यों के गुणों के प्रतीक के रूप में भी प्रयोग किया जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- साँची में पेड़-पौधों को भी प्रतीक के रूप में प्रयोग किया गया है।
- पेड़ का अर्थ एक पेड़ नहीं था वरन् वह बुद्ध के जीवन की घटना का प्रतीक था।
- चित्र के शीर्ष भाग में पशुओं के साथ बौद्ध-भिक्षुओं के देखने से प्रतीत होता है कि वे पशुओं को कितना महत्व देते थे।
- निचले भाग में पशुओं के कटे हुए सिर भी हैं जो शायद उस समय प्रचलित रही बलिप्रथा को दर्शाते हों।
- चारों ओर जालीदार चित्रकारी व नक्काशी का सर्वोत्तम नमूना है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

(II)

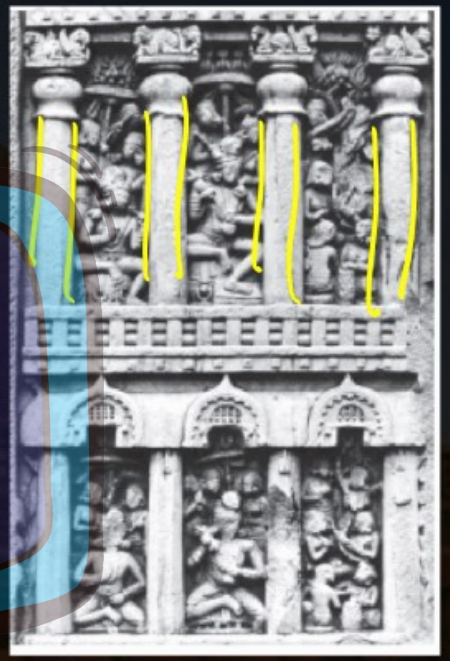

- यह चित्र शहरी परिदृश्य से संबंधित है।
- इसमें तत्कालीन वास्तुकला एवं मूर्तिकला की विशेषताओं के बारे में जानकारी मिलती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- इस चित्र में बड़े सुन्दर स्तम्भ, स्तम्भों के ऊपर उल्टे कलश तथा उनके ऊपर विभिन्न पशुओं को उत्कीर्णत किया गया है।
- कलशों के ऊपर दो दिशाओं में घोड़े तथा शेर की मूर्तियाँ बनी हुई हैं। पशुओं के चित्र मनुष्य के गुणों के प्रतीक के रूप में दर्शाई गई है।
- इसके प्रथम दो भागों में एक आसन पर एक राजा बैठा हुआ है जिसके ऊपर एक छत्र लगा है तथा उसके पीछे दो सेवक पंखा कर रहे हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- स्तम्भों के नीचे जालीदार सुन्दर कार्य दर्शाया गया है। उसके नीचे झरोखे हैं जिनमें शानदार नक्काशी प्रदर्शित है।
- इस चित्र के निचले भाग में भिक्षु, बुद्ध तथा बोधिसत्तों की उपासना में लीन है।
- इसमें वाद्ययंत्र बजाते हुए भी लोगों को दिखाया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

8. वैष्णववाद और शैववाद के उदय से जुड़ी वास्तुकला और मूर्तिकला के विकास की चर्चा कीजिए।

उत्तर :

- वास्तुकला :- वैष्णववाद तथा शैववाद के अन्तर्गत अनेक मंदिरों का निर्माण करवाया गया।
- देवी-देवताओं की मूर्तियों को रखने के लिए मंदिर बनाये गये।
- शुरू में मंदिर एक चौकोर कमरे की तरह थे जिन्हें गर्भगृह कहा जाता था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

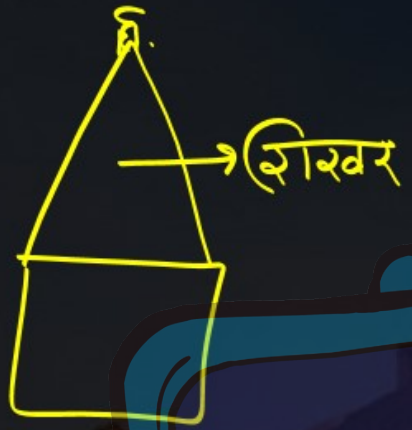

पुराण। कथा।
रामाय०।
महाभारत

- इनमें एक दरवाजा होता था जिससे उपासक मूर्ति की पूजा करने के लिए भीतर प्रविष्ट हो सकता था।
- धीरे-धीरे गर्भगृह के ऊपर एक ढांचा बनाया जाने लगा जिसे शिखर कहा जाता था।
- मंदिरों की दीवारों पर अक्सर भित्ति चित्र उत्कीर्ण किये जाते थे।
- बाद के युगों में मंदिर स्थापत्य का काफी विकास हुआ तथा मंदिरों के साथ विशाल सभास्थल, ऊँची-ऊँची दीवारें तथा तोरण भी बनाये जाने लगे साथ ही जल आपूर्ति का भी इंतजाम किया जाने लगा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER



- शुरू-शुरू के मंदिरों की एक खास बात यह थी कि इनमें से कुछ पहाड़ियों को काट कर खोखला करके कृत्रिम गुफाओं के रूप में बनाये गये थे।
- कृत्रिम गुफाऐं बनाने की परम्परा काफी पुरानी थी।

कैलाशनाथ मंदिर :-

- मंदिर बनाने की परम्परा अलग-अलग चरणों में विकसित होती रही।
- इसका सबसे विकसित रूप 8वीं सदी के कैलाशनाथ मंदिर में नजर आता है जिसमें पूरी पहाड़ी को काटकर उसे मंदिर का रूप दिया गया था जो बहुत ही आश्चर्यजनक व अद्भुत है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

मूर्तिकला :-

- वैष्णववाद में कई अवतारों को मूर्तियों के रूप में दिखाया गया है।
- लगभग छठी सदी की विष्णु के वराह अवतार की मूर्ति जिसमें उन्हें पृथ्वी देवी को बचाते हुए दिखाया गया है, ऐहोल (कर्नाटक) में मिली है।
- छठी सदी की ही दुर्गा की एक मूर्ति महाबलीपुरम (तमिलनाडु) से प्राप्त हुई है।
- शिव को उनके प्रतीक लिंग के रूप में बनाया जाता था लेकिन कई बार उनको मनुष्य के रूप में भी दिखाया गया है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

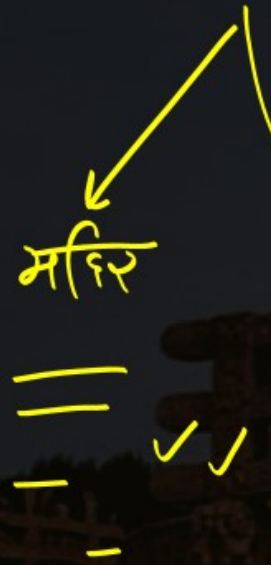

- सभी मूर्तियों के चित्रण देवताओं से जुड़ी हुई उनकी मिश्रित अवधारणाओं पर आधारित थे।
- देवताओं की मूर्ति बनाते समय उनकी खूबियों को उनके वस्त्रों, आभूषण, आयुधों और बैठने की शैली से इंगित किया जाता था।
- मूर्तियों के अंकन का मतलब समझने के लिए इतिहासकारों को उनसे जुड़ी कहानियों से परिचित होना पड़ता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

9. स्तूप क्यों और कैसे बनाऐ जाते थे ? चर्चा कीजिए।

उत्तर : स्तूप बनाने के कारण

- स्तूप ऐसे पवित्र टीले थे जहां पर बुद्ध से जुड़े अवशेष जैसे उनकी अस्थियां या उनके द्वारा प्रयुक्त सामान गाड़ दिये गये थे।
- स्तूप बनाने की परंपरा बुद्ध से पहले से ही रही होगी, लेकिन बाद में वह बौद्ध धर्म से जुड़ गई।
- इनमें पवित्र अवशेष रहते थे इसलिए ये बौद्ध धर्म की प्रतिष्ठा के प्रतीक बन गए।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

